

गुरुगीता

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

||श्री:||

गुरुगीता भाषा

खानदेशीयरावेरग्रामनिवासि परशुरामभट्टतनय-
गोविन्दशास्त्रिणा विरचिता

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

संस्करण : दिसंबर २०१७, संवत् २०७४

मूल्य : २० रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशक :
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४.

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khemraj.com
E-mail : khemraj@khemraj.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune - 411 013.

॥ श्रीः ॥

गुरुगीता भाषा

श्रीलक्ष्मीनृसिंहाय नमः

एक समय सुन्दर कैलास पर्वतपर श्रीपार्वतीजी ने लोकोपकार के लिये महादेवजी से प्रशन किया ॥१॥ पार्वतीजी बोली कि, हे शंकर सद्गुरु ! हे परमेश्वर ! हे कृपासागर ! श्रीमहादेवजी ! मुझको गुरुदीक्षा दीजिये ॥२॥ हे देवाधिदेव ! इस जीव को किस उपाय से ब्रह्मप्राप्ति होती है ? यह आप कहिये, मैं आपके चरणों की शरण में आई हूं, आपको नमस्कार हो ॥३॥ इस प्रकार से पार्वतीजी का कथन सुनकर भगवान् श्रीशंकरजी बोले कि, हे पार्वती ! तुम मेरा ही अवतार हो, मुझसे भिन्न नहीं हो ॥४॥ तुमने जो यह प्रशन किया है, वह लोकोपकार के लिये किया है। पहले ऐसा प्रश्न कभी किसीने नहीं किया ॥५॥ हे भवानी ! तुम्हारे इस

प्रश्न का उत्तर त्रिभुवन में भी दुर्लभ है, परंतु मैं तुमको बताऊंगा, सद्गुरु के सिवाय कोई भी तत्त्व इन तीनों भुवनों में अधिक नहीं ॥६॥ वेद, शास्त्र, पुराण, इतिहास, नाना प्रकार की विद्यायें, चौसठ कला, उच्चाटन, मारण, मोहन, जारण, वशीकरण आदि ॥७॥ शैवमत, वैष्णवमत, सौरमत, गणेशमत और शाक्तमत ये सब भी सब जीवों को भ्रांतिकारक हैं॥८॥ हे पार्वती ! सद्गुरु की प्राप्ति होने के लिये सब पुण्यकर्म करना, इसलिये (प्रथम) सद्गुरु के भक्तिमार्ग में लगना ॥९॥ हे भक्तश्रेष्ठे ! अखण्ड (निरन्तर) गुरु की भक्ति करना, देव और गुरु इनमें भेद नहीं धरना ॥१०॥ जैसा देव वैसा ही गुरु; गुरु से देव बड़ा नहीं ऐसा जिसका निश्चय है, उसको सभी सिद्धियां प्राप्त होती है ॥११॥ 'गु' यह अक्षर अन्धकार का वाचक है, और 'रु' यह अक्षर प्रकाशक तेज का वाचक है, जो अज्ञानरूपी अन्धकार का नाश करके ज्ञानरूपी तेज का प्रकाश करता है, वह "गुरु" कहलाता है,

ऐसा "गुरु" इन दोनों अक्षरों का अर्थ है ॥१२॥ सद्गुरु के दोनों चरण आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक इन तीनों तापों का निवारण करनेवाले हैं, और संसाररूपी समुद्र से तारनेवाले हैं ॥१३॥ यज्ञ, दान, तप और तीर्थ यह गुरु की प्राप्ति के लिये करना चाहिये; ऐसा जो निश्चय करके जानते नहीं, उन्हें मूर्ख समझना ॥१४॥ इसीलिये मुनिजनों ने कहा हैं कि, अपने मन में स्वहित विचार करके गुरुदेव के चरण में बुद्धि रखना ॥१५॥ जिसने सब जगत् को मोहित किया है ऐसी विष्णु की माया बड़ी दुर्घट है, परंतु सद्गुरु का उदय होनेसे उसका नाश होता है ॥१६॥ जीव ब्रह्म ही है, यह कहना सत्य है परंतु जब (जीव को) सद्गुरु का योग होता है, तब उसके सब पाप, ताप नष्ट होते हैं ॥१७॥ जो गुरु के चरणसंबंधी तीर्थ का सेवन करता है, उसने सब तीर्थों में स्नान किया और वह भक्तराज धन्य हुआ ॥१८॥ सद्गुरुरूपी तीर्थ सभी पापों को दग्ध करता है, सब अज्ञानों को उखाड देता है, संसारसमुद्र से

तार देता है ॥१९॥ सद्गुरुरूपी तीर्थ के सेवन से वैराग्यसहित ज्ञान उत्पन्न होता है, गुरु के चरणोदक से जन्म और कर्मों का निवारण होता है ॥२०॥ प्रथम गुरुदेव को भोजन देकर पश्चात् जो आप भोजन करे, उसको यथाक्रम से गुरूच्छिष्ट भोजन कहते है ॥२१॥ गुरुमूर्ति का ध्यान करना और गुरु की स्तुति का पाठ करना, तथा गुरु के रहने का जो स्थान है; वही काशीक्षेत्र है ऐसा समझना ॥२२॥ गुरु का चरणोदक जो है, सो भागीरथी का जल है; और जो गुरु है वही साक्षात् ज्योतिर्लिङ्ग है ऐसा समझना ॥२३॥ गुरु का चरण ही अक्षयवट है, ऐसा समझ के उसके ऊपर अपना मस्तक धरना गुरु की मूर्ति को प्रत्यक्ष प्रयागराज ऐसा समझना ॥२४॥ गुरुमूर्ति का स्मरण करना और निरन्तर ध्यान करना और एकाग्रभाव से गुरु की आज्ञा का पालन करना ॥२५॥ गुरु के मुख में ब्रह्म रहता है वह ब्रह्म (गुरु की सेवा करे तो) बिना प्रयत्न मिलता है, फिर जैसे किसी व्यभिचारिणी स्त्री का चित्त पराये पुरुष में

आसक्त होता है ।।२६।। वैसे ही परब्रह्म में पुरुष का चित्त आसक्त हो जाता है। जो पुरुष गुरुभक्ति में तत्पर होते है उनको कुलदेवता वगैरह का कोई उपद्रव नही सताता। उनकी कीर्ति की पुष्टि होती है और वह गुरु के सिवाय कुछ नहीं जानता ।।२७।। जो एकाग्रभाव से गुरु का भजन करता है उसको मेरा गुरुरूप निरंजनपद सुलभ होता है । यह समझो ।।२८।। हे पार्वती ! मैं कहता हूं। तुम सुनो, अनेक प्रयत्नों से गुरु का भजन करना, गुरु के प्रसाद से गुरुमुख से विद्या का पठन करना ।।२९।। त्रैलोक्य में जो बड़े बड़े देव,नाग,राक्षस, ऋषि,मनुष्य और विद्याधर है, उनको गुरुप्रसाद ही प्राप्त हुआ है ।।३०।। "गु" यह प्रथम अक्षर है, वही सत्त्व, रज, तमरूपी माया का आकार है और "रु" यह ब्रह्म का आकार है, यह सभी मायाओं का नाशक है।।३१।। ऐसा यह "गुरु" पद अत्यन्त श्रेष्ठ हैं, देवों को भी मिलना कठिन है, हाहा, हूहू नामक बड़े गन्धर्व भी गुरु को पूजने के लिये दौड़ते हैं ।।३२।। हे पार्वती !

तुम निश्चय पूर्वक समझो कि, गुरु का भजन करना यह अत्यन्त श्रेष्ठ है, गुरु के सिवाय त्रैलोक्य में कोई भी तत्व नहीं है ॥३३॥ साधक शिष्य गुरु को आसन, शयन, वाहन, वस्त्र, अलंकार और भूषण ये समर्पण करे जिससे गुरु प्रसन्न रहे ॥३४॥ गुरु के लिये अपना जीवन, द्रव्य, स्त्री, देह, प्राणादिक सर्वस्व समर्पण करना ॥३५॥ इस शरीर का विचार किया जाय तो यह कैसा है कि, इसमें कीडे, दुर्गंध, मलमूत्र और कफ भरे पडे हैं, जिनका अन्त नहीं ॥३६॥ यह शरीर हड्डी और मांस का बना हुआ गोला है, इसका विचार किया जाय तो तिरस्कार उत्पन्न होता है। ऐसा यह शरीर जो गुरु के भजन में लगकर सार्थक हो तभी अच्छा है॥३७॥ लौकिक लज्जा छोडकर शरीर, वाणी और मन से सद्गुरु को एकाग्र अन्तःकरण से नमस्कार करो ॥३८॥ यह शरीररूपी फल संसाररूपी वृक्ष को लगा है और नीचे गिरना चाहता है कि इतने में कृपावन्त गुरु से शरीररूपी फल का नरकरूपी सागर से रक्षण किया जाता है॥३९॥

ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर ये भी गुरु के अवतार हैं, स्थावर जङ्गम सब गुरु ही है गुरु ही परब्रह्म का अंश है ।।४०।। अज्ञान से नेत्र मूंद गये, तब जिन्होंने ज्ञानरूपी शलाका से वे नेत्र खोल दिये, उन गुरु के चरणारविन्द को नमस्कार हो ।।४१।। वह गुरुतत्त्व आकाश से भी परे अखण्ड और सघन मण्डलाकार है उन्होंने यह सब ब्रह्माण्ड व्याप्त किया है और वह सर्वत्र परिपूर्ण है ।।४२।। गुरुचरण सर्व श्रुतियों का रत्नालङ्कार है और वेदान्तरूपी कमल को प्रफुल्ल करनेवाला जैसा सूर्य ही है ।।४३।। उस गुरु में मन लगाने से संसार से तारण होता है, गुरु का स्मरण करने से सम्पत्तिसहित ज्ञान की प्राप्ति होती है ।।४४।। गुरुतत्त्व चैतन्यरूपी और शांत है, पूर्ण निरञ्जन और आकाश से भी परे है। नाद, बिन्दु और कला से रहित है और अगोचर है ।।४५।। स्थावर, जङ्गमरूप, अलिप्त और निराकार ऐसा गुरु है, उस श्रीगुरु के लिये नमस्कार हो ।।४६।। वह गुरु ज्ञानशक्तिपर चढा हुआ, तत्त्वरूपी अलङ्कारों से शोभित हुआ है।

यह ब्रह्माण्ड उसको मानो फूलों की माला सरीखा शोभता है ॥४७॥ गुरु भोग मोक्ष का देने वाला, अनेक कर्मबन्धों को छेदनेवाला, जीवों को ज्ञान उत्पन्न कर देनेवाला है और स्वयं सभी का उद्धार करता है ॥४८॥ जैसा बड़वानल समुद्र के जल को औटाता है, वैसे सद्गुरु संसार समुद्र को औटाता है । गुरुतीर्थ का माहात्म्य कौन जानता है अर्थात् कान में गुरु के उपदेश होने से सब ज्ञान होता है ॥४९॥ गुरु के सिवाय औरकोई तत्त्व तारनेवाला नहीं है । तप अनुष्ठानादिक सब गुरु ही हैं ॥५०॥ जो मेरा स्वामी गुरुनाथ है, वही सब जगत् का गुरु निश्चय ही है। सब जगत् का स्वामी और सर्वात्मा गुरु ही है ॥५१॥ गुरु की मूर्ति ही ध्यान का मूल है। गुरु के चरण ही पूजा का मूल है, गुरु के वचन ही मन्त्र का मूल है और गुरु की कृपा ही मोक्ष का मूल है ॥५२॥ गुरु सबके आदि है, गुरु के आदि कोई नहीं गुरु ही सब बुध्दि देता है, विधि विधान, जप जाप्य सब गुरु ही है ॥५३॥ ब्रह्माण्ड में

स्थित सब तीर्थ समुद्र में मिलते हैं वे सब तीर्थ एकत्र होकर भी गुरु के चरणकमल के माहात्म्य की तुलना नहीं कर पाते हैं ।।५४।। गुरु के चरणकमल के हजारवें हिस्से के भी समान तीर्थ नहीं होते हैं और ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश्वर जो कोई हैं वे भी गुरु के समान नहीं हैं ।।५५।। इस जगत् में जितना कोई आकार है सो सब गुरु का अंश है, इसलिये निश्चल अन्तःकरण से उस गुरु को ही भजना ।।५६।। गुरु का भजन करने से विज्ञानसहित ज्ञान की प्राप्ति होती है ऐसी वेद की स्वयं गर्जना है।।५७।। गुरु के प्रसाद से देव, गंधर्व, पितृगण,यक्ष,सिद्ध,चारण,ईश्वर आदि ।।५८।। ये सभी अपने अपने स्थानपर विराजमान हैं, अब इनको भक्ति करने की आवश्यकता नहीं रहती, इनको गुरुप्रसाद से विजय प्राप्त हुआ है और अपने को गुरुप्रसाद से ऐसा प्राप्त हुआ है यह वे नहीं जानते ।।५९।। वे अहंकार गर्व करके संसाररूपी अन्धकार में आते हैं और विद्या,तप के बल से अपने अपने अधिकार में निमग्न हैं ।।६०।।

गंधर्व,देव,पितर,सिद्ध,चारण,यक्ष,किन्नर ये वहांपर गुरुभक्ति नहीं करते हैं। इसीलिये उस स्थान से मुक्त नहीं होते ।।६१।। वे गुरु की सेवा नहीं जानते हैं, इसीलिये संसार में आते जाते है। हे पार्वती ! अब यह रहने दो। अब गुरु का ध्यान सुनो ।।६२।। जिस गुरुध्यान को सुनने से मन को परम आनन्द होता है और अत्यन्त दुस्तर संसारदुःख कभी नहीं होता ।।६३।। गुरु का ध्यान भोग और मोक्ष का कारण है, सर्व सुखों का भण्डार है जिसके श्रवणमात्र से पवित्र हो जाते हैं ।।६४।। गुरु श्रीमंत हैं, गुरु ब्रह्म हैं; उनको नहीं भूलना। उनको नमस्कार करना ।।६५।। गुरु ब्रह्मानन्द की मूर्ति है गुरु से परमसुख की प्राप्ति होती है और सुख दुःख की अत्यन्त शान्ति होती है ।।६६।। गुरु, अचल निर्मल,तीनों गुणों से रहित, सर्व बुद्धियों को साक्षीभूत भाव-अभाव से रहित है उनको नमस्कार हो ।।६७।। हृदयकमल के भीतर मध्यकर्णिका के सिंहासनपर दिव्यमूर्ति गुरु विराजमान है ।।६८।। उनका वर्ण चन्द्रसरीखा शुद्ध है, उनके हाथ

में पुस्तक सुशोभित है । दूसरा वरदहस्त विराजमान है ।।६९।। गुरु ज्ञानस्वरूप प्रसन्न है ज्ञान देकर पवित्र करनेवाला है, कृपामूर्ति है, उसका आनन्द से दर्शन करना ।।७०।। गुरुदेव नित्य शुद्ध निरञ्जन निराभास, विकाररहित, नित्यबोध, चिंदानन्दघन है ।।७१।। गुरुदेव ने शुभ्र वस्त्र परिधान किये है, श्वेत पुष्प और मौक्तिकों की माला गले में पहिने है, उनके नेत्रकमल ऐसे सुन्दर हैं कि जिनकी उपमा नहीं, गुरु के बायें अङ्ग में आत्मशक्ति बैठी है।।७२।। योगीजन जिसकी स्तुति करते हैं, जो संसाररोगियों को केवल अमृतरूप है, जो शिक्षा और प्रसाद करने में समर्थ हैं, ऐसा वेद कहते हैं ।।७३।। ऐसा पांच महाभूतों को प्रेरणा देनेवाला, दो भुजाओंवाला, श्वेतकमल को धारण करनेवाला गुरु है, उसका ध्यानपूर्वक प्रातःकाल में स्मरण करना ।।७४।। उस गुरु के चरणों का निरन्तर ध्यान करना, उसका ध्यान करने से महादोषों का स्वयं नाश हो जाता है।।७५।। गुरु से अधिक त्रिभुवन में कोइ भी नहीं है, शिव और

जीव ये भी गुरु के आज्ञाधारक हैं। यही श्रुति का उपदेश है।।७६।। हे पार्वती ! यह गुरुतत्त्व ही मेरा बैठने का सिंहासन है, सो मैं तुमको त्रिवार सत्य कहता हूं, ऐसा गुरु का भजन करने से स्वयं ज्ञान उत्पन्न होता है।।७७।। ऐसा ध्यान करने से फिर "मैं मुक्त हूं" ऐसी भावना उत्पन्न होती है और शिष्य करना ऐसी मन में वांछा उत्पन्न होती है, तब जैसा मार्ग अपने को मिला है वैसा ही मार्ग शिष्य को दिखाकर उसका अन्तःकरण शुद्ध करना।।७८।। जितना असत्य है उसको दूर करना, जितना सत्य है उसको सहाय करना, और अपने स्वभाव से सबके ज्ञान अज्ञान का विचार करना।।७९।। हे पार्वती ! ऐसा होने से जो कोई गुरुनिन्दा करते हैं वे जब तक चन्द्र सूर्य हैं तब तक घोर नरक में पडते हैं।।८०।। जब तक जीव देह में रहता है तब तक समर्थ गुरु का भजन करना। भक्तजन इस लोक में गुरु का लोभ नहीं करे ।।८१।। गुरु स्वच्छंद भी हो, तो भी शिष्य के लिये वह नमस्कार योग्य ही है। गुरु के सामने

'हूं' ऐसा शब्द बोलना नहीं और उन्मत्त भाषण करना नहीं ॥८२॥ जो गुरु के सामने असत्य भाषण करता है और अहङ्कार अथवा वाद करता है, गुरु जो कहेगा वह सुनकर अपनी शक्ति के मद में अँधा बना गुरु वचनों की अवमानना करता है ॥८३॥ वह पुरुष निर्जल स्थल में बहुत काल तक ब्रह्मराक्षस होता है बाद में नानाप्रकार की तामस योनि को प्राप्त होता है॥८४॥ गुरु के मन को कुछ त्रास होवे तो उसका मन से शाप होता है। तब वह मनुष्य, देव, सर्प आदि योनियों में त्रास पाता है उस समय उसकी गुरुदेव ही कालमृत्युभय से रक्षा करता है॥८५॥ गुरु ने जिसको शाप दिया हो, उसकी कोई भी रक्षा नहीं करता, उसकी रक्षा करने में ईश्वर भी समर्थ नहीं है ॥८६॥ जो नित्यप्रति गुरुमन्त्र का देववाक्य सरीखा स्मरण करते हैं वे ही श्रेष्ठजन हैं ऐसा वेदशास्त्र में कहा है॥८७॥ वे ही संन्यासी हैं ऐसा जानना। जो गुरु की सेवा से पराङ्मुख है और दूसरे साधू, जोगी, बैरागी, आचारी के वेष लेते हैं वे

योगी नहीं हैं ऐसा समझना ॥८८॥ जैसा परब्रह्म सर्वत्र व्यापक, निर्विकार अक्षर है, ऐसा ही सर्वत्र व्यापक निर्विकार अक्षर गुरु का देह मानना ॥८९॥ गुरु की कृपा से आत्माराम का उत्तम लाभ होता है। सद्गुरु कृपा से स्वयं ज्ञान का आगम होता है॥९०॥ ब्रह्मा से लेकर अणु पर्यंत जितने कोई स्थावर जङ्गम जीव हैं वे सब गुरु ही हैं॥९१॥ सत् चित् आनन्दरूप सदा उदय पाये हुए निर्गुण निरञ्जन सत्य और परात्पर ऐसा गुरु का शरीर है, उसको नमस्कार हो॥९२॥ हृदय आकाश में निर्मल स्फटिक सरीखा उज्ज्वल है मानो आईने के सरीखा चमकनेवाला॥९३॥ अंगुष्ठमात्र प्रमाणवाला ऐसा गुरु का स्वरूप है उसका ध्यान करना, फिर चिन्मय स्वरूप का स्फुरण होता है॥९४॥ फिर उस स्फुरण को छोडकर मन को निर्विकल्प करना और अगोचर निरञ्जन स्वरूप का ध्यान करना॥९५॥ वह अपने स्वभाव से कपूर जैसा है शीतोष्ण से परे है, अथवा मानो कुंकुम के रंग सरीखा है ऐसा परमब्रह्म

शुद्ध है ॥९६॥ अपने भी वैसा ही होना, एकसरीखा ही स्वभाव करके स्थित होना, जैसा कीटक भ्रमर एक रूप से ध्यान करते करते भ्रमर हो जाता है, वैसा ही एक सा गुरु के रूप को ध्यान करना ॥९७॥ गुरु के ध्यान को तुम जानो कि, एक सा ध्यान करनेवाला गुरुभक्त का भी गुरुरूप ही हो जाता है, पिण्ड पद स्वरूप के क्रम से गुरुरूप होता है, फिर सर्व संशयों का नाश होता है ॥९८॥ स्वयं गुरुरूप होकर सर्वत्र एकसरीखा गुरु को ही देखता है, जैसे घटाकाश, मठाकाश और महाकाश पृथक् दीखते हैं परंतु आकाश यह सर्वत्र एक सा ही है ॥९९॥ शान्त रहना, वासना का त्याग करना, सङ्ग छोडना, जो लाभ होगा उसमें चित्त को सन्तोष रखना ऐसा निरन्तर रहना ॥१००॥ थोडा या अधिक जो कुछ मिलेगा उससे चित्त को सन्तुष्ट रखना और निरन्तर कामना का परित्याग करना ॥१०१॥ ऐसा गुरु का दास होकर सर्वत्र सर्वदा उदास रहे, वह गुरुभक्त जिस देश में रहे वह देश सर्व जगत् में

पुण्यकारक है ।।१०२।। इस प्रकार मुक्त के लक्षण मैंने तुमको बताये और इस मार्ग से गुरु का उपदेश तथा गुरुध्यान आदि भी कहा ।।१०३।। हे पार्वती ! ऐसा उपदेश हो तो निश्चय ही लोकोपकार होता है, सभी जन में दंभ अभिमान करने से पुण्यकर्म का नाश होता है ।।१०४।। ऐसा यह पुण्यकारक आख्यान है, इस पुण्यकारक गुरु के आख्यान को जो कोई पठन और श्रवण करते हैं और ब्राह्मण को लिखकर दान करते हैं ।।१०५।। उन्हींको सर्वदान का फल प्राप्त होता है, संसार रोग नष्ट होकर वे निर्मल होते हैं, यह केवल मन्त्रराज है, इसके सरीखा और दूसरा कोई मन्त्र नहीं है ।।१०६।। अन्नदान का अनन्त फल है,सर्व पापों का नाश करता है, राक्षसों का भुवन नाश करने का और व्याघ्र चौरादिकों के नाश करने का अनन्त फल है उससे भी इस गुरुआख्यान का पाठ, श्रवण और दान का फल अधिक है ।।१०७।। सद्गुरु सभी विघ्नों को दूर करता है, अष्टसिद्धियों को घर में लाता है; ऐसा वह

सद्गुरु सर्वकाल में स्मरण करन योग्य है॥१०८॥ गुरु का स्मरण करके विभूति लगावे तो महान् रोग नष्ट होते हैं, राजालोग वश होते हैं, शत्रुओं का नाश होता है॥१०९॥ हे पार्वती ! यह गुरुगीता कुशासन अथवा कमलासनपर ध्यान रख कर निष्काम बुद्धि से पठन करे ॥११०॥ रक्तवर्ण का आसन अरिष्टों का निवारण करता है, कमलासन शत्रुओं का नाश करता है, धनप्राप्ति के लिये पीतवर्ण का आसन करना ॥१११॥ उत्तर की ओर मुख करने से अरिष्टों का निरसन होता है, पूर्व की ओर मुख करने से शत्रु वश होते हैं, दक्षिण की ओर मुख करने से शत्रु मर जाते हैं, और पश्चिम की ओर मुख करने से धन साध्य होता है॥११२॥ पश्चिम की ओर मुख करने से सर्वभूत मोहित होते हैं। राजभवन में बन्धन नहीं, देवाधिदेव तथा राजा लोग वश होते हैं॥११३॥ चुगलखोर का मुखबन्धन होता है जो काम होने को अशक्य है वह भी होता है, गुणों की वृद्धि होती है,और दुष्ट कर्मों का नाश होता है॥११४॥

दुष्ट ग्रहों का निवारण होता है, दुष्टस्वप्नों का नाश होता है, भावपूर्ण भजन करने से स्त्री भाग्यवती होती है॥११५॥ भक्तजनों को यह गीता आरोग्यकारक, आयुष्यकारक है, पुत्र पौत्रों की वृद्धि करती है, और निष्काम मोक्ष को देती है॥११६॥ वन्ध्या को पुत्र होते हैं इच्छित धन की प्राप्ति होती है, यह गुरुभक्ति चिन्तामणिरत्न सरीखी कामना सिद्ध करनेवाली है॥११७॥ यह गीता काम मोक्ष को देती है तथा संपूर्ण इष्टों को प्राप्त कराती है शिव, विष्णु, सूर्य और गणेश इनके भी जो भक्त हैं वे भी॥११८॥ सभी जो इस गुरुगीता का पठन करेंगे तो उनको भी फल प्राप्त होगा, अब इसके अनुष्ठान के स्थान कहता हूं ॥११९॥ हे पार्वती ! समुद्र,नदी के तटपर,तीर्थपर,विष्णु और शंकर के देवालय में, गोस्थान में, तुलसीवृन्दावन में अथवा जहां संन्यासी रहते हों वहां॥१२०॥ वट के नीचे अथवा आंवले के नीचे, प्रत्येक पीपल के तल में एकाग्रमन से अनुष्ठान करें ॥१२१॥ ये निष्काम भक्तों

के लिये स्थान कहे, अब सकामों के स्थान सुनो। भय की जगह, श्मशान, धतूर, आंब ये स्थल सकामों के अनुष्ठान करने योग्य हैं॥१२२॥ जो मनुष्य मूर्ख हैं वे भी इस गुरुगीता को पढें तो वे भी गुरु का शिष्य गुरु सरीखा श्रेष्ठ होता है॥१२३॥ यह गुरुगीता संसारमूल का नाश करनेवाली है, जल सरीखी पवित्र है, इसको जो पढते हैं उनको ज्ञान उत्पन्न करा देती है, इसमें संशय नहीं॥१२४॥ ऐसा गुरुगीता का पाठ करके जो भक्तराज है वही संत और पवित्र है, वही देवरूप है, उसमें ही तीर्थजल रहता है॥१२५॥ वह भक्त आसन में बैठा हो, शय्यापर सोता हो अथवा भोजन करता हो, घोडा और हाथीपर चढकर सुख से चलता हो॥१२६॥ तो भी उसे सदा पवित्र समझना, उसके दर्शन से मोक्ष होता है, उसके सिवाय और दूसरा कुछ कल्याण नहीं॥१२७॥ जैसा जल जल में मिलकर एक हो जाता है, घट और मठ में का आकाश मिलकर एकसा हो जाता है वैसा ही जीव और शिव एक होते

हैं, इनमें भेद नहीं रहता ।।१२८।। ऐसा भेदरहित जो मुक्त पुरुष है, उसका ईश्वर के भाव से भजन करना और दान सेवा तथा उपचार इनको प्रयत्न से करना ।।१२९।। गुरु जो संक्षेप से बोलता है वह सत्य होकर सफल होता है और उस गुरु के जिह्वाग्र से भोग तथा मोक्ष प्राप्त होते हैं।।१३०।। ऐसा यह गुरुगीता का माहात्म्य है इसके सरीखा और दूसरा कुछ नहीं है। इसको जो कोई पढते हैं वे धन्य हैं और जो गुरु का भक्त वह भी धन्य है।।१३१।। गुरु ही माता है गुरु ही पिता है, गुरुदेव ही स्वजन है, गुरुदेव ही बन्धु है, गुरुदेव संतुष्ट होने से कोट्यवधि पूज्य देवता संतुष्ट होते है।।१३२।। विद्या और धन से गर्वित होकर जो गुरु को मानते नहीं वे कर्मदरिद्री यमपुरी के रहनेवाले होते हैं।।१३३।। इसलिये गुरु ही ईश्वर है, यही निश्चय सत्य है,बहुत बोलने का काम नहीं ।।१३४।। हे पार्वती ! जीवन्मुक्ति के लक्षण तुम सुनो, उसको मुक्त कहना और दूसरे बद्ध कहलाते हैं।।१३५।। जिसके

अन्तःकरण में सर्वदा शान्ति और शील रहता है, जिसका मन कोमल है जो दयावान् और पुण्यवान् है स्वधर्म को छोडता नहीं ॥१३६॥ वेद को ईश्वर का वर्णन करते करते श्रम हुआ उसको अनादि धर्म लगाये हैं वे सब धर्म जीवन्मुक्त ने छोड दिये हैं ॥१३७॥ जिसको गुरुदेव का अंश भी नहीं समझता है, वह देव का अपराधी है, मूर्ख और अल्पबुद्धि है, वह नीच है ॥१३८॥ इसलिये अच्छे संत ऐसा जान करके अन्तःकरण में शान्त होते हैं और वे ही स्वधर्म के मूल का रक्षण करते हैं ॥१३९॥ जिसको स्वर्ण, मृतिका, ढेला, पत्थर, शत्रु, मित्र ये सब भी एक सरीखे हैं ॥१४०॥ जिसके देह में अहङ्कार नहीं, जिसके हृदय में पाप नहीं, हे पार्वती ! वही जीवन्मुक्त है ऐसा तुम जानो ॥१४१॥ यह गुरुगुह्य अभक्तों से नहीं कहूंगा, स्वामी कार्तिक यह मेरा पुत्र है ॥१४२॥ गणेश आदिक पुत्र हैं, उनसे यह गुप्त कहूंगा और तुम भी भक्तों को प्रकट करो ॥१४३॥ जो अभक्त, क्रोधी, कपटी हैं

क्रिया से हीन हैं निंदक और पाखण्डी हैं ॥१४४॥ जो पुण्य और पाप नहीं ऐसा कहता है परंतु जिसको लोभ और स्वार्थ छूटता नहीं वह निश्चय से नास्तिक है ऐसा तुम जानो ॥१४५॥ उसके प्रति इस गीता की वार्ता तुझको नहीं कहना चाहिये, मन करके उसके साथ बोलना भी नहीं ॥१४६॥ जो जितेन्द्रिय और शान्त है, विरक्त चिह्नों से शोभायमान है, जिसका चित्त परिपक्व हुआ है, उसको इस गीता का उपदेश करना ॥१४७॥ संस्कृत ग्रन्थ व्यास ने निर्माण किया, शिव ने पार्वती को उपदेश किया उसी ग्रन्थ की प्रेम से यह भाषा बनाई है ॥१४८॥ वेद के साररूप इस गीता को चतुर श्रोताजन श्रवण करें, ऐसी साधुजनों की प्रार्थना दास करता है ॥१४९॥

इति श्रीस्कन्दपुराणे उत्तरखण्डे उमामहेश्वरसंवादे गुरुगीतायाः भाषाव्याख्यानं संपूर्णम् ॥

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१
दूरभाष - ०५४२-२८२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

